(1) तुलसी की काव्यकला या शिल्प पक्ष

कविता के शिल्प की मूल कसौटी है कि वह कथ्य को सम्पूर्ण भाव के साथ व्यक्त कर सके। हिन्दी साहित्य के कुछ कवियों ने कथ्य को अत्यधिक महत्व दिया तथा शिल्प को अत्यंत गौण माना। जैसे — कबीर और प्रगतिवादी कवि। इसके विपरीत कुछ कवियों ने शिल्प को इतना अधिक महत्व दिया कि वह कथ्य पर भारी पड़ गया। जैसे— बिहारी, केशव आदि रीतिकालीन कवि। केवल तुलसीदास जैसे गिने-चुने कवि ही कथ्य एवं शिल्प के बीच अद्भुत संतुलन साधने में समर्थ हुए हैं।

महान कवि होने के बावजूद तुलसी काव्यशास्त्र की दृष्टि से स्वयं को अज्ञानी मानते हैं।——

★ "कवित विवेक एक नहिं मोरे। सत्य कहौं लिखि कागद कोरे।"

★ चरित सिंधु मति सीप समाना।

...सकहुँ। ...गावहुँ।

★ "कवि न होउँ नहिं बचन प्रबीनू।
सकल कला सब बिद्या हीनू॥"

मोरे मति थोरे। ...कागद कोरे॥

तुलसी कविता में समुचित कथ्य के साथ संबंधित शिल्प को ही सार्थक मानते हैं।

"भनिति विचित्र सुकवि कृत जोऊ।
राम नाम बिनु सोह न सोऊ॥"

उनका दावा है कि राम नाम जैसे सुंदर कथ्य के बिना कविता चाहे जितना सजे, वह सुन्दर नहीं हो सकती।

भाषा :- (क) संस्कृत के विद्वान होने पर भी उन्होंने लोकभाषा— अवधी और ब्रज में रचनाएँ की।

"भाषा बद्ध करबि मैं सोई।
मोरे मन प्रबोध जेहिं होई॥"

उन्होंने संस्कृत और लोकभाषा के मध्य समन्वय भी स्थापित किया है।

" का भाषा का संस्कृत, प्रेम चाहिए साँच।
काम जु आवै कामरी, का लै करिअ कुमाच।"

) प्रधानत: अवधी और ब्रज भाषाओं में तुलसी ने काव्य रचना की।

रचना — भाषा

कवितावली, गीतावली, विनय पत्रिका — ब्रज

राम-चरितमानस, जानकी मंगल, पार्वती मंगल — अवधी

शब्द-भंडार — तद्भव मुख्य रूप से तुलसी के काव्य में आए हैं। तत्सम, देशज और विदेशज शब्दों का भी उन्होंने प्रचुर प्रयोग किया है।

तत्सम — सच्चिदानंद, संस्कृत, प्रबोध, जीविका।

तद्भव — सायर (सागर), पब्बै (पर्वत), अहेर (आखेट)

विदेशज — गरीबनेवाज, बकसीस, मसीत, जुलुम, दरबार

शब्द-निर्माण — तुलसी ने संज्ञा से क्रिया-पद और क्रिया से संज्ञा शब्दों का निर्माण बखूबी किया है। जैसे —

संज्ञा से क्रिया निर्माण :-

उपदेश — उपदेसऊ (मानस)

पीड़ा — पीड़हिं (मानस)

गाम — गामिहैं (कवितावली)

क्रिया से संज्ञा निर्माण :-

लूट — लूटक (मानस)

शरीक — शरीकता (कवितावली)

मुहावरों और कहावतों का प्रयोग :— लोक-प्रभाव की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है

" धूत कहौ, अवधूत कहौ ....

.... लैबो को एकु न दैबे को दोऊ॥

ध्वनियों का सटीक प्रयोग :—

"भाव के साथ ध्वनि की तरंगें उठाने-गिराने में वे अद्वितीय हैं"

— डॉ० रामविलास शर्मा

शब्दों की ध्वनि योजना द्वारा अर्थ की व्यंजना देने में तुलसीदास जैसी निपुणता हिन्दी के किसी अन्य कवि के पास नहीं है" — कंकन, किंकिनि, नूपुर धुनि - - -

— डॉ० विश्वनाथ त्रिपाठी

बिम्बात्मकता :- तुलसी की कविताई इस दृष्टि से महान है कि इसमें <u>अर्थ ग्रहण</u> के साथ-साथ <u>बिम्ब ग्रहण</u> का भी समुचित समावेश है। बिम्बात्मकता से विशेष से कवित ऐन्द्रिक अनुभूतियों से बोध है। तुलसी के समय बिम्ब की अवधारणा काव्यशास्त्रीय प्रतिमान के रूप में प्रचलित नहीं थी। चूंकि, बिम्ब आधुनिक पश्चिमी अवधारणा है। किन्तु इसके बावजूद महान कवि की तरह तुलसी की कविता बिम्बात्मक प्रभावों को धारण करती है। जैसे——

"राम को रूप निहारति जानकी, कंगन के नग की परिछांही।
यातें सबै सुधि भूलि गई कर टेकि रही पल टारत नहीं।"

—— <u>कवितावली</u>

★ **प्रतीकात्मकता** :- कविता में कम शब्दों में अधिक प्रभावी बात कहने के लिए या गूढ़ार्थ की अभिव्यक्ति के लिए कवि प्रतीकों का प्रयोग करता है। प्रतीकों के प्रयोग से कविता <u>सारगर्भित</u> हो जाती है। तुलसी ने प्रासंगिक प्रतीकों का प्रयोग कर कविता को प्रभावोत्पादक बना दिया है।

"तुलसी पावस के समय धरि कोकिलन मौन।
अब तो दादुर बोलिहैं हमें पूछिहै कौन॥"

—— 'मानस'

"दारिद दसानन दबाई दुनि दीन बंधु, दुरित दहन देखि तुलसी हहा करी।" (क०)

★ **छंद योजना** :- तुलसी ने अपनी कविताओं में <u>विषयों के अनुकूल</u> लय को ध्यान में रखते हुए अलग-अलग छंदों का चयन किया है। रामचरित मानस में अवधी भाषा के अनुरूप दोहा और चौपाई का तथा कवितावली में ब्रज भाषा के अनुरूप कवित और सवैया (मात्रिक छंदों) का प्रयोग किया है। जैसे—— खेती न किसान को, भिखारी ··· (क०)

तुलसीदास ने राग केदार, राग गौरी, जैतश्री, बिलावल आदि रागों का प्रयोग किया है।

"राम कहत चलु, राम कहत चलु, राम कहत चलु भाई रे।"

(राग- गौरी —— <u>विनयपत्रिका</u>)

★ **अलंकार-योजना** :- तुलसी कविता में कथ्य को महत्व देते हैं, किन्तु कथ्य की प्रभावशाली अभिव्यक्ति के लिए उन्होंने अलंकारों का सधा हुआ एवं संयमित प्रयोग किया है। उनकी कविता में स्वाभाविक रूप से शब्दालंकार कम हैं और अर्थालंकार अधिक। शब्दालंकारों से उन्हें मोह तो नहीं है किन्तु ध्वनि मैत्री आदि गुणों से वे कविता की अर्थवत्ता को जरूर बढ़ाते हैं। आचार्य शुक्ल के शब्दों में- "वे अनुप्रास के बादशाह थे।"

"कीरति भनिति भूति भलि सोई।
सुरसरि सम सब कहँ हित होई।" (मानस)

"कहि-कहि कोटिक कपट कहानी—" (मानस)
" परत चार चटकन चकार।" (कवितावली)

अर्थालंकारों में तुलसी को उपमा, रूपक, और उत्प्रेक्षा अधिक प्रिय है।

उपमा — "लोचन जलु रह लोचन कोना।
-सा,-से,-सी, जैसे जैसे परम कृपन कर सोना।" (मानस)

रूपक (hyphen) — "तुलसी बुझाई एक राम-घनश्याम ही तें,
आगि-बड़वागि तें बड़ि है आगि पेट की।" (कवितावली)

उत्प्रेक्षा — "राम नाम मनि दीप धरु जीह देहरी द्वार।
तुलसी भीतर बाहिरहु जौं चाहसि उजियार॥" (मानस)

अधिकतर उपमान दैनंदिन जीवन-परिवेश से चुने गए हैं जो सशक्त अभिव्यंजना करने में सक्षम हैं। जैसे — बालका अलङ्कृत पाया है। पंकज कोश ओस कन जैसा (ओस कन का कण)

अलंकारों के संदर्भ में तुलसी की विशेषता है कि वे 'उपमानों की ताजगी' की खोज करनेवाले कवि हैं। कविता में अभिव्यक्ति का नयापन बहुत कुछ उपमानों की नवीनता पर ही निर्भर करता है।

"सब उपमा कवि रहे जुठारी।
केहि पटतरौं बिदेह कुमारी॥"

★ **चरित्र-योजना** :- प्रबंध काव्यों में शिल्प का एक महत्वपूर्ण तत्व चरित्र योजना है क्योंकि, कवि चरित्रों के माध्यम से ही अपने मंतव्य को व्यक्त करता है। 'मानस' को हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ चरित्र-प्रधान काव्य माना गया है। इसमें प्रत्येक चरित्र को आनुपातिक स्पेस मिला है। कवितावली इस दृष्टि से थोड़ी कमजोर रही है।

मूल्यांकन :— इस प्रकार, कह सकते हैं कि तुलसी भक्तिकाल के वे कवि हैं, जिन्होंने कथ्य और शिल्प में अद्भुत सामंजस्य स्थापित किया है। उन्होंने लोकभाषा में भी संस्कृत के रस को घुला दिया है। बिम्ब, प्रतीक और